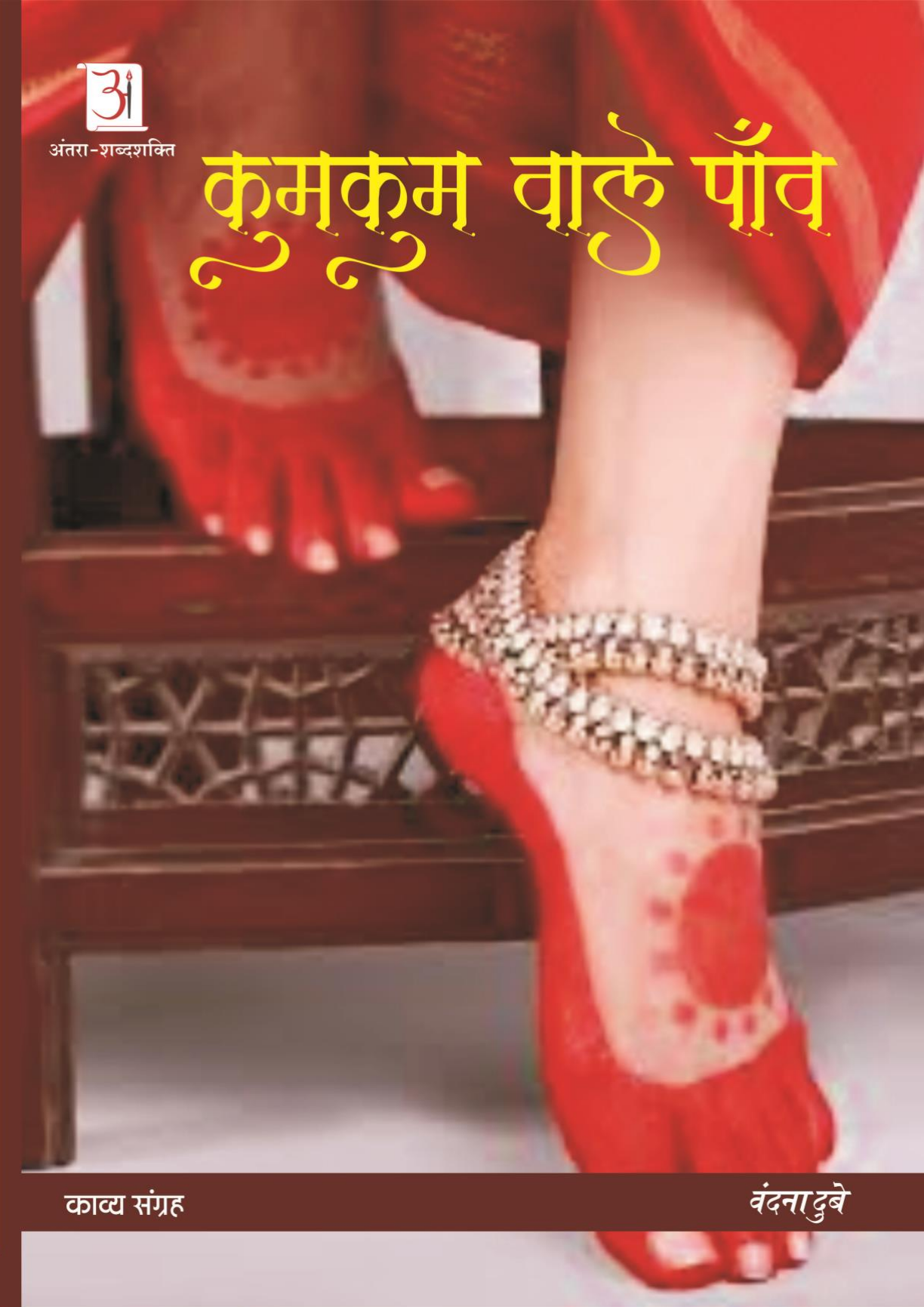

अंतरा-शब्दशक्ति

कुमकुम वाले पाँव

काव्य संग्रह

वंदना दुबे

कुमकुम वाले पाँव

(काव्य संग्रह)

वंदना दुबे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-14-7

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- वंदना दुबे

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Kumkum wale panv by Vandana Dubey

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

आज मौन और मनन जैसे शब्द नैपथ्य में चले गए हैं। सोशल मीडिया के त्वरित परिणाम हर कल्पना, हर चिंतन, हर शील, हर लेखन पर भारी हैं; वहीं पाठकों का अभाव इस दुखती रग पर उँगली रखने जैसा है।

लेखकों की भरमार के बीच, ये अहोभाग्य कि मेरा प्रथम काव्य संग्रह कुमकुम वाले पाँव आपके हाथ में है।

मनुष्य ईश्वर भक्ति में लीन हो या घोर चिंता में डूबा हो, प्रफुल्लित हो या भयाक्रांत, अपनों के बिछड़ जाने से व्यथित हो या सामाजिक व्यवस्था से आहत ; हर स्थिति में हृदय की भावभूमि में कविता प्रस्फुटित हो ही जाती है और सौभाग्य से स्वयं के साहस अपनों के प्रोत्साहन से वह सघन विकसित लता बन पुष्पित होती है।

मेरे स्वर्गीय माता-पिता जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी दृढता से सत्य का दामन थामे रखने और ईश्वर सत्ता पर भरोसा रखने को सदा- सर्वदा प्रेरित कर एक आत्मिक संबल प्रदान किया वहीं वर्तमान की सामाजिक व्यवस्था ने हृदय को कुछ आहत, कुछ निराश भी किया।

हिन्दू धर्म की एक बहुत लुभावनी, मधुर संस्कृति नववधू के कुमकुम भरे पाँवों के चिन्ह अब स्त्री उत्पीड़न और रक्तपात के कारण धूमिल हो गए हैं। इस वीभत्सता को कोमल प्रकृति चित्रण हल्का करने का प्रयास अवश्य किया है मैंने। आपकी प्रतिक्रियाएँ यह सुनिश्चित करेंगी कि मैं इसमें कहाँ तक सफल हुई हूँ।

कुमकुम वाले पाँव काव्यांजलि माँ- बाबूजी को समर्पित है।

इस काव्य संग्रह हेतु आदरणीय प्रीति सुराना जी के सहयोग एवं प्रोत्साहन का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

आप पाठकों का, स्नेह और आशीर्वाद बना रहे ,..!

वंदना दुबे, धार (इंदौर) मध्यप्रदेश

अनुक्रमणिका

1.	सरस्वती वंदना	7
2.	बाबूजी	8
3.	माँ	9
4.	कुमकुम वाले पाँव	10
5.	माँडवी की विरह व्यथा	11
6.	मौसम	12
7.	वचन तुम्हे निभाना होगा	13
8.	फागुन	14
9.	ज़िन्दगी	15
10.	यादें	16
11.	दूरियाँ	17
12.	कविता कहाँ अवस्थिति है	18
13.	मेरे कदम	19
14.	होली	20
15.	इबादत है	21
16.	माहिया	22
17.	दुर्घटना से देर भली	23
18.	वर्तमान राजनीति	24

19. सुर की महफिल 25
20. ग्रीष्म 26
21. गौरैया की व्यथा 27
22. हिन्दी अभिव्यक्ति 28
23. नारी 29
24. कुछ दोहे 30
25. धीर 31
26. भटकी तरुणाई 32

सरस्वती वंदना

भारती, माँ भारती
श्वेताम्बरा माँ भारती

श्वेत पद्म विमलासन संस्थित
धवल तुषार हार उर मंडित
उज्जवल हंस पृष्ठ आसीने
शुक्लांबर व्रत धारिणी माँ
भारती, माँ भारती श्वेतांबरा माँ
भारती

माँ वागेश्वरी नाद ब्रह्ममयी,
ललित -कलामयी, ज्ञान-विभामयी
विद्या, ज्ञान, गान विस्तारिणी
वीणा, पुस्तक धारिणी माँ
भारती ,माँ भारती श्वेतांबरा माँ
भारती

झंकृत कर मधु वीणा के स्वर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
संयम , सत्य, प्रेम का वर धर
तू कुन्ठा-विश हारिणी माँ
भारती ,माँ भारती, श्वेतांबर माँ
भारती

मंद-मंद स्मित अंब तुम्हारी
वंदे अरविंदासन सुन्दरी
कर में राजे स्फटिक मालिका
तू करुणा कल्याणी माँ
भारती, माँ भारती, श्वेतांबर माँ
भारती

मंगलमयी , अमंगल-हारिणी
देव, पुरंदर ,नहीं कवि वरणी
शुभ दृष्टि की वृष्टि कर दे
अखिल जगत उद्धारिणी माँ
भारती, माँ भारती, श्वेतांबर माँ
भारती

बाबूजी

बाबूजी तुम कहाँ चले गए
मुझे अकेला छोड़ के

नहीं घेरती कभी हताशा
जीवन की उत्कट आशा
अमिट प्रेम की अभिलाषा थे
प्रोत्साहन की परिभाषा
आशीषों के बरगद थे तुम
शीतलता की ठौर थे
बाबूजी तुम कहाँ चले गए---

गीता के विश्लेषण में तुम
कौटिल्य नीति ज्ञान में
ज्योतिष की गणनाओं में तुम
जीवन के संग्राम में
नहीं हारते तुमको देखा
कठिनाई के दौर में
बाबूजी तुम कहाँ चले गए---

विचलित न देखा था तुमको
अधुनातन के शोर में
सबसे आगे तुमको देखा
संस्कारों की दौड़ में
थे आज़ाद खयालों में भी
मर्यादा की डोर में
बाबूजी तुम कहाँ चले गए---

सबसे प्यारी बेटी थी मैं
कंधों पर सो जाती थी
रात कहानी में कट जाती
नए-नए ख्वाब सजाती थी
दीवाली की जगमग में तुम
राखी की उस डोर में
बाबूजी, तुम कहाँ चले गए---

जीवन भर का शूल चुभा है
तुमसे मिलने आ न सकी
अंत समय आ ही जाएगा
ये न मैं तो जान सकी
संतोषी मुस्कान अधर पर
दोनों मुट्ठी खोल के
बाबूजी तुम कहाँ चले गए ---

सारे बंधन तोड़ के
बाबूजी तुम कहाँ चले गए
मुझे अकेला छोड़ के।

माँ

माँ! बहुत याद आती है
मेरी कोई कोशिश
अब उसे
पास नहीं लाती है।
माँ थी, तो प्यार था
घर में इंतजार था
तुलसी की परिक्रमा थी
आरती में मधुरिमा थी
रसोई में महक थी
सकोरों पर
पंछियों की चहक थी
माँ थी तो डाँट थी
निराशा में भी आस थी
इच्छाओं पर नियंत्रण था
समय का नियोजन था
उसे बच्चों की चिंता थी
और बच्चों में निश्चिंतता थी
माँ थी तो आदेश थे
नियमों पर उपदेश थे
अनुशासन पर जोर था
पर बच्चों का मीठा शोर था
माँ थी तो जिद थी
वो सबकी रुचि से परिचित थी
गर्मियों में छनती ठंडा थी
जाड़ों में रात भर
तन पर रज़ाई थी
अब,
न जिद है, न प्यार है
डाँट है, न इंतजार है
कभी रसोई में,
तो कभी देवघर में
आँखें ढूँढती हैं उसे
बहुत दूर चली गई है वह
तस्वीर हो गई है
आज समझ पाई हूँ
माँ, माँ होती है
हाथ नहीं पहुँचता मेरा
उसकी ऊँचाईयों तक।

कुमकुम वाले पाँव

अरुणोदय का पंछी-कलरव
ढूंढ रहा है ठाँव

स्मृतियों में ही शेष बची वह
पीपल वाली छाँव

जिह्वा में वह राम नहीं अब
न शरयू , न केवट नाँव

शैशव भी अब खेल रहा है
शकुनि वाले दाँव

श्रुतियाँ हुईं अभ्यस्त कपट की
श्रीविहीन-से लगते गाँव

रक्तपात में धूमिल-से वह
कुमकुम वाले पाँव

धिक्कार रही है राजतंत्र को
दीपक-तल की छाँव

मूक हो गई तान- कोकिला
कौवे की ऊँची कर्कश काँव

माँडवी की विरह व्यथा

हे ! रघुकुल के भरत श्रेष्ठ !
मुझसे क्या अपराध हुआ ?
पोषितपतिका-सा यह जीवन
क्यों मुझको उपहार दिया ?
पिय के स्वप्न सजाए मन में
पुलकित वधू अवध में आई
माँ कैकेई के महाकोप की
छाया से जैसे कुम्हलाई
राघवेन्द्र के अनुयायी तुम
वनवासी अवतार लिया
किंचित भी न सोचा मेरे
सपनों को निस्सार किया
भ्रातृ प्रेम के सम्मुख स्वामी
संगिनी प्रेम उपेक्षित-सा था
पलभर भी न स्नेह से तुमने
मुझपर दृष्टिपात किया था
सौभाग्यमयी वह चरण पादुका
मेरे भाग्य विरह था
भूल हुई क्या मुझसे स्वामी
यूँ विस्मृत मुझे किया था !

अश्रु बूँद छिपा नयनों में
निर्विकार से भाव लिये
हाय! अभागी विवश विरहिणी
जीवित थी उच्छ्वास लिये
राजमहल में कैसे , किसको
निज विरह व्यथा सुनाती
उर्मिला-सी सहानूभूति
कहो कहाँ से पाती ?
माना दारुण कष्ट सहे थे
जीजी ने जंगल में
श्री राघव का स्नेह साथ था
कष्ट भी थे मंगलमय
हाथ हृदय पर रखकर कहना
क्या पलभर भी था स्मरण हमारा
या नयनों की अश्रु धारा
बहा ले गई प्रेम वो सारा
वर्ष चतुर्दश विरह अग्नि में
स्वर्णकाल वो भस्म हुआ
पूछेगा इतिहास भी तुमसे
क्या माँडवी संग ये उचित हुआ ?

मौसम

धरा जाड़ों के मौसम में, नया श्रृंगार लाती है।

कभी मिलने चले आना ,
कभी हौले-से छिप जाना ,
ये मौसम की अदाएँ भी ,
धरा को खूब भाती है। धरा जाड़ों के मौसम में---।

महकती है फ़िज़ाएं भी
हवा भी गुनगुनाती है।
वो हरसिंगार की डाली से
मिलने रोज़ आती है। धरा जाड़ों के मौसम में---।

पंछी गीत गाते हैं ,
चमन भी खिलखिलाता है ,
वो रंगीं तितलियाँ फूलों पे
बैठी मुस्कुराती हैं। धरा जाड़ों के मौसम में---।

निराली शान से देखो
कमल खिलते तड़ागों में ,
कहाँ से पंक्तियाँ इतनी
चली भौरों की आती है। धरा जाड़ों के मौसम में---।

वचन तुम्हे निभाना होगा

संकट में है प्रजा हिन्द की
वचन तुम्हे निभाना होगा
खूब हो रही धर्म की हानि
हे ! कृष्ण! तुम्हे आना होगा

कुछ पाँडव को छोड़ शेष सब
दुर्योधन-से व्यभिचारी
तब थी द्रोपदी एकमेव
अब द्रोपदियों की संख्या भारी
सबकी लाज बचाने तुमको
धरती पर आना होगा
संकट में है प्रजा हिन्द की,...

कण-कण में रिपु-कंस बसे हैं
शासन जिनका अत्याचारी
नहीं भरोसे लायक कोई
लूट रहा वो जिसकी बारी
इन बगुलाभक्तों के छल से
आकर हमें छुड़ाना होगा
संकट में है प्रजा हिन्द की,..

गोपालक बन मटकी फोड़ी
माखन खूब लुटाया
अबके ये गोरक्षक कैसे
दूध दही को तरसाया
नकली दूध का फैला धंधा
शिशु के प्राण बचाना होगा
संकट में है प्रजा हिन्द की,..

खूब धरा का हुआ है दोहन
षड्ऋतुओं का बिखरा है क्रम
प्राणवायु भी दुर्लभ अब तो
सूखा पड़ा, कहीं जल प्लावन
उँगली में गोवर्धन लेकर
सबके प्राण बचाना होगा
संकट में है प्रजा हिन्द की,.....

वचन तुम्हे निभाना होगा ।

फागुन

रंगीला फागुन आया है।
रंगीला फागुन आया है।
वधू-वसुधा भी पुलकित है ,
वो परिणय-पत्र लाया है।

हिलोरें ले रहा यौवन
उमंगें खिलखिलाई हैं ,
रंगीले पी से मिलने को
धरा ने रूप सजाया है।

रंगीला फागुन आया है।
रंगीला फागुन आया है।

ओढी है जो फूलों की
धरा ने चूनर सतरंगी ,
सजाई माँग किंशुक से
सिंदूरी रंग भराया है।

रंगीला फागुन आया है।
रंगीला फागुन आया है।

चंचल शोख़ हवाओं की
हुई कैसी शरारत ये ,
कपोलों में धरा के लाल-
गुलाबी रंग लगाया है।

रंगीला फागुन आया है।
रंगीला फागुन आया है।

बौर आए रसालों पर
हुई चंपई फ़िज़ाएं भी ,
मधूरी तान में कोकिल ने
मंगल गीत गाया है।

रंगीला फागुन आया है।
रंगीला फागुन आया है।

ज़िन्दगी

काँटों का ताज नहीं
बालों में टँकी फूलों की वेणी है
ज़िन्दगी
माथे की शिकन नहीं
ललाट पर चमकती सिंदूरी बिंदी है
ज़िंदगी

नाक में नकैल नहीं
मुखड़े पर झूलती सुन्दर नथनी है
ज़िन्दगी
मुख का कड़वा घूँट नहीं
अधरों पर थिरकती मुस्कान है
ज़िन्दगी

गले में पड़ा फंदा नहीं
रत्नों का दमकता हार है
ज़िन्दगी
आड़ी तिरछी दुर्भाग्य की लकीरें नहीं
हथेलियों पर महकती मेहंदी है
ज़िन्दगी

कलाई में पड़ी हथकड़ियाँ नहीं
किंकिणियों की खनक है
ज़िंदगी
तलवों के छाले नहीं
महावरी पैरों में छनकती पायल है
ज़िन्दगी

काँटों का दुशाला नहीं
रेशमी सतरंगी चूनर है
ज़िन्दगी
चलती फिरती लाश नहीं
रूपसी, कामिनी, मानिनी है
ज़िन्दगी

कौए सा कर्कश बोल नहीं
कोकिल-सी मीठी तान है
ज़िन्दगी
आधा खाली नहीं
आधा गिलास भरी है
ज़िन्दगी

यादें

मन आँगन के इर्द-गिर्द
जाने क्यों मँडरातीं यादें

आतुरता से मन के पट को
धीरे से सरकातीं यादें
निचले ओठ की कोर दबाकर
शरमा कर छुप जातीं यादें

कुछ उद्दंड हठीली-सी
मन को आँख दिखातीं यादें
चंचल-चंचल शोख़ चुलबुली
ताक-झाँककर जातीं यादें

कभी चीखती जोर-जोर से
अंतस तक घुस आतीं यादें
दृढ-प्रतिज्ञ-मन से भय खाकर
दुम दबा कर जातीं यादें

सोम-सुधा-कलश छलकाती
मादक रस टपकतीं यादें
कभी वेदना में लिपटी-सी
अश्रु-प्लावन लातीं यादें

लहरा कर काँटों का आँचल
घाव कई दे जातीं यादें
स्वर्णिम-पंख पसार कभी तो
स्वर्गिक सैर करातीं यादें

कटु-पर्ण-अर्क अंजुली भर-भर
कड़वा घूँट पिलातीं यादें
दृढ-प्रतिज्ञ और कर्मठ-मन से
दूरी सदा बनातीं यादें

बहते जल-सी जगह बना कर
मन को तर कर जातीं यादें
बाज नहीं क्यों आतीं यादें ?
दूर नहीं क्यों जातीं यादें ?

दूरियाँ

गति समय की गिनता चल, मानव ! तू तो चलता चल
अंजुरि-भर रिश्तों की पूंजी
स्वप्न सुनहरे बुनता चल, मानव ! तू तो चलता चल ।

संताप, उपेक्षा, संकट में
अधीर, दुखी न होना तू
छूट गया, गर कुछ जीवन में
नहीं, बैठ कर रोना तू
खुशियों की माला के मोती
एक-एक तू गुनता चल, मानव ! तू तो चलता चल ।

पतझड़ भी बीतेगा इक दिन
पुनःबहारें आएँगी
पर्ण-पुष्प फिर खिल जाएँगे
जगति रास रचाएगी
जंगल में फिर होगा मंगल
शिखि-सा नर्तन करता चल, मानव ! तू तो चलता चल ।

नहीं दूरियाँ कुछ देती हैं
अपितु शान्ति हर लेती हैं
दूरी की दीवारें तो बस
नीरसता को ही जनती हैं
तोड़ दूरियों की दीवारें
गले सभी के मिलता चल, मानव ! तू तो चलता चल ।

कविता कहाँ अवस्थिति है

महाराणा के शूल में कविता
मातृभूमि की धूल कविता
ममता के भीगे आँचल में
बालेपन की भूल में कविता

साँझ ढले नीड़ों में सोते
पंछी के सुकून में कविता
पनघट की वो हँसी-ठिठोली
कलश-कटि की झूल में कविता

नव किसलय के कोमल तन पर
चुभते हुए बबूल में कविता
कदम-डाल पर वेणु की धुन
कालिंदी के कूल में कविता

नटखट कान्हा की चोरी में
गोपी के दुकूल में कविता
मीत-प्रीत की आस लिए हर
मन में खिलते फूल में कविता

हरित-पर्ण और लोनी-लतिका
मधुबन के हर फूल में कविता
शिव के तांडव-नर्तन में
त्रिनेत्र और त्रिशूल में कविता

आत्मा की एकमेव उपज ये
सूक्ष्म और स्थूल में कविता
हर रस के , हर अलंकार के
हर एक भाव के मूल में कविता

मेरे कदम

दौड़कर मंजिल छू लेने को आमदा
क्यों कभी-कभी कदम मेरे

साहस छोड़ जाते हैं
उम्मीदों को मरते देख
क्यों कभी-कभी कदम मेरे
लड़खड़ा जाते हैं
सब कुछ पा कर भी उदास से
क्यों कभी-कभी कदम मेरे

निढाल हो जाते हैं
अनजाने भय की आशंकामें
क्यों कभी-कभी कदम मेरे
ठिठक जाते हैं
खुशी के अतिरेक में
क्यों कभी-कभी कदम मेरे

बहक जाते हैं
मद में फूले-फूले से
क्यों कभी-कभी कदम मेरे
जमीं छोड़ जाते हैं
बहुत कोशिशों पर भी
क्यों कभी-कभी कदम मेरे
साथ नहीं निभाते हैं

होली

आ गया है मधुमास
मन में रंगीली आस
गोप गोपियन में
आज क्यों अबोली है

ब्रज में मची है धूम
कान्हा संग घूम-घूम
गोपियों को ढूँढ रही
देखो ग्वालटोली है

छत की मुंडेर पार
छुपी बैठी ब्रजनार
अबीर-गुलाल भरी
एक-एक झोली है

घेर लीनी ग्वाल-टोली
केशर तिलक रोली
डूब रही रंग में
कितनी ये भोली है

तिरछे कटीले नैन
गोपियों के तीखे बैन
नेह नहीं फिर ऐसी
कैसी ये ठिठोली है

रंगीली है आज होली
रार छोड़ो हमजोली
ऋतु ये सुहानी मधु
रस-रंग घोली है

भर पिचकारी मारी
रूपसी ये कौन नारी
भीग रही देखो कैसी
कान्हा बरजोरी है

वृषभानु की किशोरी
कान्हा संग खेले होरी
केशर फुहार देखो
होली है , होली है।

इबादत है

नहीं सजदे में केवल सर झुकना ही इबादत है
कठिन इंसानियत की राह अपनाना इबादत है

किसी की कोशिशों से आज सच्चाई भी जिन्दा है
फरेब-ओ-झूठ से सबको बचाना भी इबादत है

यहाँ पर शख्स हर कोई मुसीबत में ही डूबा है
किसी के लब पे थोड़ी सी हँसी लाना इबादत है

लुटाती भेदभाव बिन ये सृष्टि संपदा अपनी
जरूरतमंदों में धन को लुटाना भी इबादत है

बुजुर्गों का न अब सम्मान करती है ये नई पीढ़ी
युवाओं को सही राहें दिखाना भी इबादत है

वो सूरज चाँद तारे और धरा निज कर्म में रत हैं
ये कर्मठता तुम्हारे मन में आना भी इबादत है

श्रृषि दुर्वासा के आदर्शों पर क्यों लोग चल निकले
वचन,मन,कर्म से राघव का हो जाना इबादत है

माह्या

कितनी मन-भावन है
लड़ियाँ रिमझिम की
सावन ये सुहावन है

उत्सव है ये बूँदों का
बिजुरी नाच रही
बादल बहका-बहका

साजिश ये हवाओं की
डाल के गलबहियाँ
बन मीत घटाओं की

अमृत के कलश भर-भर
श्याम घटा लाई
अभिषेक है पर्वत पर

बूँदों की थिरकन पर
आली, बावली-सी
गाए मल्हार के स्वर

हरियाली की चूनर
धरती नवेली ने
ओढी है सजधज कर

लो इंद्रधनुष निकला
हुई सतरंगी छटा
आकाश का रूप खिला

मिश्री की डाली कोयल
कूक रही वन में
मोरों ने किया नर्तन

श्रेणी है ये मधुकर की
चाह लिए आई
कलियों की फूलों की

पीपल की शाखों पर
झूला झूल रही
मतवारी हँस-हँस कर

अब और न तरसना
रस छलकाती तुम
मनघट पे चली आना

दुर्घटना से देर भली

दुर्घटना से देर भली,
ये निर्देशों की भाषा है
मृत्यु की परवाह किसे
केवल लक्ष्य-पिपासा है
अति शीघ्रता में हर कोई
यहाँ दिखाई देता है
तुम्हीं बताओ चेतावनी-स्वर
किसे सुनाई देता है
रुकजाना है मर जाना
राह देना ,मौका गँवाना
सूर्य-चंद्र-धरा सभी हैं
समय के पाबंद
फिर विलंब कर क्यों करें
हम निज राहों को बंद ?
होड़ यही, बस लक्ष्य को पाना है
फिर जीवन का भी तो,
नहीं कोई ठिकाना है
सत्य है, शीघ्रतासे मंजिल तक पहुँचिये
दुर्घटना ही सही, पर देर मत करिये

वर्तमान राजनीति

चर्चा चुनावकी है,हर दूजा इक पे भारी
आखिर कहाँ रुकेगी,मलीनता तुम्हारी
छींटाकशी में भूले, मर्यादाएँ सारी
संस्कारी पृष्ठभूमि लगती नहीं तुम्हारी

थैली के चट्टे-बट्टे, सब मोसेरे हैं भाई
मिलकरके सबने लूटी मोटी परत मलाई
नई पीढ़ी देखती है,दिनरात की लड़ाई
भ्रमजाल में उलझकर, भटकी नई तरुणाई

साहस विवेक पर अब बाजारवाद भारी
अब बस हो राजनीति , ख्वाहिश यही हमारी
कलयुग का ये नजारा बस खत्म हो यहीं पर
सत्ता-अधर्म-रक्षक अवतार लो मुरारी

हो विश्व में प्रतिष्ठित गुरु राजनीति के तुम
आदर्श और भाषा सिखलाओ जो बिसारी

सुर की महफिल

रवि के भय से, दुबकी बैठी
सूर्य ढले पर बाहर आई

लाई साँझ, संगीत-संदेशा
निशा सितार उठा ले आई
शशि ने छेड़ी मधुर तान
ज्योत्स्ना ने मीठी ठुमरी गाई

अपनी डफली अपना राग
तारक-दल ने धूम मचाई
राग-रागिनी छिड़ी मनोहर
सुर की महफ़िल जोश में आई

प्रहरी सजग हुआ ध्रुवतारा
भोर भए की भेरी बजाई
सभा सुरों की भंग हुई फिर
निशा ने सबकी विदा कराई

घूँटट में हँस प्रथम-किरण ने
सुरीली-सी प्रभाती गाई
चहके पंछी,फिर जगति पर
नूतन-जीवन-राग सुहाई

ग्रीष्म

ग्रीष्म काल की दस्तक से
झुलस गया मधुमास
जलती धरती व्याकुल पंछी
लिये तृप्ति की आस

किंशुक की छोटी चिन्गारी
सुलगा गई शिरीष की ज्वाल
अमलतास भी हुलसित दिखता
धधक रही गुलमोहर डाल

वक्र हुई दृष्टि तरणी की
सिकुड़ा तप्त धरा का व्यास
सुलग रही है सृष्टि सारी
शिथिल पड़ा सबका उल्लास

पोखर-सरिता सूख गए सब
बरस रही अंगार
तपी रोहिणी जेठ झुलसता
धरती पड़ी दरार

हुआ दिवस लहू-लुहान
संध्या भी कुम्हलाई
रजनी झुलसी, लपटें लेकर
चली ऊष्ण पुरवाई

ढूँढ रहे पंछी-मानव सब
हरित पर्ण की छाँव
हाहाकार मचा धरती पर
झुलस गए सब गाँव

प्यासे कंठ तृषित दृष्टि है
ऊर्ध्व गगन की ओर
कब आएँगे श्याम मेघ
इस धरती की ओर।

गौरैया की व्यथा

एक दिवस फुनगी पर बैठी
गौरैया मुझसे बोली
मानवता संभव हो जीवित
पर भूल हुई अनजानी भोली

बम्फर फसल उगाने तूने
कीटनाशी का छिड़का डाला
कीटभक्षी मेरे चूज़ों का
मुख से छीन लिया निवाला

भूखे, व्याकुल मेरे चूज़े
जीवित फिर न बच पाए
विराम लगा मेरी पीढ़ी पर
वंश बढा न हम पाए

ज़ुल्म यहीं पर थमा नहीं था
प्रजनन क्षमता भी क्षीण हुई
मोबाइल टावर की घातक किरणें
मेरी पीढ़ी को लील गई

वृक्षों पर के करतब कलरव
हुई अतीत की बातें सब
पानी के सूख पोखर में
पंख भी गीले ,होते न अब

तू जो भोला बनकर दाने
छज्जों पर है बिखराता
मानवता का पहन के चोला
नमक घाव पर छिड़काता

अरे! नहीं तुम मेरी सोचो
पीढ़ी अपनी स्वयं बचा लो
इंसानी छल स्वार्थ मिटाकर
एक एक तुम पेड़ लगा लो

हिन्दी अभिव्यक्ति

जब भी सोचा भीतर से
आवाज़ है आई हिन्दी में
चोट लगी तब दर्दीली-सी
आह भरी वो हिन्दी में

नतमस्तक हो प्रभु के सम्मुख
विनय करी वो हिन्दी में
सपनों में थी स्वर्ण-पंख
उन्मुक्त उड़ानें हिन्दी में

भावावेश में बोल कटीले
मुख से निकले हिन्दी में
मारे भय के रक्षा की
गुहार लगाई हिन्दी में

मीठी लोरी गाकर लालन
को दुहराया हिन्दी में
पिया मिलन की आस रसीली
मन इठलाया हिन्दी में

विरह-शोक संतप्त हृदय का
करुण था रूदन हिन्दी में
अंतस् से सोते फूटे थे
शुभाशीष के हिन्दी में

श्वासोच्छवास भी हिन्दी में
और जीते-मरते हिन्दी में
आत्मा की भाषा हिन्दी में
और आत्मा बसती हिन्दी में

नारी

हवाएँ भी बदलती हैं
ये मौसम भी बदलता है
ये सृष्टि भी बदलती है
तुम्हें कैसे ये समझाएँ

बूँदों की फुहारों से
ये धरती श्यामला होगी
दहकती ज्वाल कम होगी
तुम्हें कैसे ये समझाएँ

आँचल में लिये अमृत
हृदय में प्रेम का सागर
जगत का मान तुम ही हो
तुम्हें कैसे ये समझाएँ

आँसू पोंछ कर एक स्वप्न
आँखों में बसा लो तुम
नारी है स्वयं सृष्टि
तुम्हें कैसे ये समझाएँ

सोई है जो शक्ति कल वो
चंडी बन के उभरेगी
विजय फिर शक्ति की होगी
तुम्हे कैसे ये समझाएँ

कुछ दोहे

मंगलकारी दिवस का,अद्भुत यह आशीष ।
संचित पूँजी कर रही,सदा नवा कर शीश ।।

दीपक की मैं वर्तिका ,मधुर पवन सन प्रीति ।
स्नेह समीर भी मंद जब,जलती रही सभीत ।।

खुशियों के मन- सिंधु मे,गागर रही डुबाय ।
आधी-पूरी भर रही, मटकत छलकत जाय ।।

अंजुरि में भर लाई हूँ ,जूही की कलिकाएँ ।
गुँफित कर अर्पित करूँ,मूरत शोभा पाए ।।

हाथों में विश्वास हो,सन्मति भी हो साथ ।
पूरण कारज होएँगे , झुकें जगत के माथ ।।

रवि किरणों के स्पर्श से,उत्पल खिलते प्रात ।
खगरव लगता है मधुर, सुरभित-सी सौग़ात।।

चित्रांकन किसने किया, अंबर पर हर रोज ।
रवि-शशि लाली-कालिमा तारक दल की फ़ौज ।।

धीर

तुम कहते हो धीर धरूँ
बोलो कैसे धीर धरूँ

मन की पीड़ दबी ओठों में
अश्रु बन कर छलक पड़ूँ

मन बौरे की चंचल रीति
कब तक मैं गंभीर धरूँ

पुलिन किनारे बैठी सोचूँ
दुख-सरि कैसे पार करूँ

पतवारें भी टूट चुकी हैं
कैसे तरणी पाँव धरूँ

विषम लहर की झंझावतें
कितना मैं संघर्ष करूँ

दिनरैन चैन न पाऊँ अब तो
बोलो कैसे धीर धरूँ

भटकी तरुणाई

तुम भी मौन, हम भी मौन
दर्शक मूक बने बैठे सब
उत्तरदायी होगा कौन?
तरुणाई भटकी जाती है
नहीं कहीं दिशा पाती है
पश्चिम की अंधी भक्ति में
मर्यादा बिखरी जाती है
त्रस्त मात-पिता हैं मौन
आदर्शों का पोषक कौन ?
पालक धन-वर्षा करते हैं
अत्याकांक्षा से भरते हैं
दोष दूसरों पर मढ़ते हैं
जिम्मेदारी से डरते हैं
आदर्शों पर धूल जमी है
संस्कारों का वाहक कौन है?
शिक्षा का व्यापार सजा है
धनिकों का तो खूब मजा है
उच्चअंकों के क्रेता बनकर
मेधावी का तमगा धर कर
आसमान में वे चढते हैं
पाँव ज़मीं पर कब धरते हैं
पालक मौन, शिक्षक मौन
बतलाओ फिर दोषी कौन ?

संचार माध्यमों की मनमानी
चरित्र हनन करने की ठानी
टीवी में परोसी जाती
दिशाहीन नित कहानी
शासन मौन, प्रशासन मौन
दिशा उन्हें बतलाए कौन?
नेताओं में छिड़ी लड़ाई
फिर बलिदान हुई तरुणाई
राजनीति के दाँवपेंच में
मोहरा बन गई आज खेद ये
एक भेड़ के पीछे-पीछे
सब भेड़ों ने जान गँवाई
नेता मौन, प्रणेता मौन
देश-समाज सुधारक कौन?
गर्म खून का केवल दोष
अति ऊर्जा और आक्रोश
मान-सम्मान ताक धरते हैं
नहीं किसी से ये डरते हैं
आतंक-ही-आतंक छाया
घर में ही आतंकी साया
ऊर्जा को दिशा दिखाकर
जलता देश बचाए कौन?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - वंदना दुबे
जन्म - 23 दिसम्बर, जबलपुर (म.प्र.)
पति - श्री राजीव दुबे
माता-पिता - स्व.श्रीमती मनोरमा शुक्ला - स्व. श्री लक्ष्मीकांत शुक्ला
शिक्षा - हिन्दी साहित्य, संगीत एवं अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं बी.एड.
पता - 17, आनंदेश्वर मार्ग, धार (मध्यप्रदेश)
ईमेल - vandanadubey579@gmail.com, vandanadubey23@outlook.com
मो. -9926088757
विधा - गद्य- आलेख एवं कहानी, पद्य- छंदबध्द और छंदमुक्त
कार्यक्षेत्र - हिन्दी व्याख्याता
संबध्दता - सचिव- अखिल भारतीय साहित्य परिषद धार। सदस्य- मध्यप्रदेश लेखक संघ धार। आजीवन सदस्य - भोज शोध संस्थान, धार।

प्रकाशन
1. नई रौशन नई पहल, साझा संकलन (प्रजातंत्र का स्तंभ, दौसा, राज.)
2. सृजक सृजन समीक्षा (अंतरा शब्द शक्ति प्रकल्प)।
3. शब्द शिल्पी (साझा संकलन- दैनिक भास्कर, धार)।
4. अपूर्वा (गीत- नवगीत) साझा संकलन। 5. मकरंद (दोहा मुक्तक) साझा संकलन।
6. विचार मंथन, साझा संकलन (तीनो अंतरा शब्द शक्ति, के.बी.एस. प्रकाशन)।
7. पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।
8. सोच के सेतु (आलेख संग्रह) अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन।

सम्मान
1. होली के रसगुल्ले सम्मान - आनलाइन काव्यपाठ कार्यक्रम में श्रेष्ठ 21 रचनाओं में, मगसम दिल्ली द्वारा।
2. भाषा सारथी सम्मान (मातृभाषा उन्नयन संस्थान दिल्ली)।
3. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान (अंतरा समूह एवं हिन्दी ग्राम)।
4. शब्द शक्ति सम्मान (राष्ट्रीय कवि संगम)।
5. श्रेष्ठ नारी सम्मान (भोज शोध संस्थान धार)
6. वुमन आवाज अवार्ड (अंतरा शब्द शक्ति एवं मातृभाषा उन्नयन संस्थान दिल्ली)

अन्य - आकाशवाणी में गीतों का प्रसारण। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा जनजाति विभाग भोपाल में आयोजित संगीत समारोह में शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-14-7
मूल्य- 55/-